सम्पादकीय

प्रिय मित्रों,

हाल में उक्रेन में घटित घटनाक्रमों से विश्व राजनीति में शीत युद्ध के पुनः आविर्भाव का संकेत मिल रहा है। पश्चिमी देशों विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका एवं रूस के मध्य क्रीमिया के रूस में सम्मिलन को लेकर जो तनाव उत्पन्न हुए हैं उसे शीत युद्धोत्तर काल की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में सबसे बड़ा संकट माना जा रहा है। पूर्व अमेरीकी विदेश सचिव हिलैरी क्लिन्टन ने क्रीमिया पर रूस के आधिपत्य की तुलना नाजीवाद के प्रणेता हिटलर के 1938 में आस्ट्रिया तथा चेकोस्लोवाकिया के सुडेनलैण्ड भू–भाग को जर्मन साम्राज्य में मिलाने से की है। इसी तरह यदि ब्रिटेन के विदेश सचिव विलियम हेग ने इस घटना को यूरोप में 21वीं शताब्दी का सबसे बड़ा संकट बताया तो उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के महासचिव एन्द्रे रामूसीन ने इसे शीत–युद्धोत्तर काल में यूरोपीय सुरक्षा के समक्ष गम्भीर संकट करार दिया है। यहाँ तक कि अमेरिका के दोनों राजनीतिक दलों (डेमोक्रेटिक एवं रिपब्लिकन) ने रूस के विरुद्ध अत्यन्त कठोर कदम उठाने की अनुशंसा की है।

यदि शीतयुद्ध के दशकों के पुराने इतिहास का प्रात्यावाहन करें तो पूर्व एवं पश्चिम के बीच आरोपों–प्रत्यारोपों का एक लम्बा अध्याय मानस पटल पर उभरता है। क्रीमिया की घटना के उपरान्त रूस के इस आचरण के विरूद्ध उभरती प्रतिक्रियायें पुनः विश्व की शीत–युद्ध काल में धकेलने की और प्रवृत्त है।

क्रीमिया के रूस में सम्मिलन को लेकर पश्चिमी देशों की व्यथा एवं चिन्तन समझ में आती है क्योंकि रूस द्वारा शीतयुद्धोतर विश्व व्यवस्था को जिस तरह चुनौती दी गई है वह पश्चिमी देशों एवं अमेरिका को स्वीकार्य नही है। सोवियत संघ के विघटन के उपरान्त अमेरिका को एक मात्र महाशक्ति बने रहने का जो गौरव हासिल था उस पर रूस का यह कदम गम्भीर रणनीतिक प्रहार है तथा विश्व व्यवस्था में अमेरिकी वर्चस्व की खुली चुनौती है। अतः रूस द्वारा क्रीमिया के प्रति उठाए गए कदम पर तात्कालिक प्रतिक्रिया स्वरूप पश्चिमी जगत ने जी–8 समूह की प्रस्तावित बैठक को न केवल स्थगित किया बल्कि इस समूह से रूस के निष्कासन की भी घोषणा कर दी तथा इस समूह की प्रस्तावित बैठक का स्थान 'सोची' शहर से स्थानान्तरित करे 'हेग' में बैठक आयोजित करने का निर्णय लेते हुए जी–8 को जी–7 कहना प्रारम्भ कर दिया तथा रूस के आचरण को अन्तर्राष्ट्रीय विधि का घोर उल्लंघन करार दिया। उधर पश्चिमी देशों के आरापों के प्रत्युत्तर में रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने अपने कदम को न्यायोचित ठहराते हुए अमेरिका एवं पश्चिमी देशों की प्रतिक्रिया को रूस के प्रभाव को सीमित करने की सोची समझी चाल से प्रेरित बताया। क्रीमिया के रूस में औपचारिक सम्मिलन के अवसर पर क्रेमलिन में अपने उद्‌बोधन में पुतिन ने टिप्पणी की कि 'पश्चिमी देशों ने सारी सीमायें लाँघ दी हैं तथा 18वीं, 19वी एवं 20वीं शताब्दी में जिस अवरोध की नीति का उन्होने अनुसरण किया था आज उसकी पुनरावृत्ति रूस के विरूद्ध जारी की जा रही है। पुतिन का यह मन्तव्य है कि रूस ने युक्रेन में अपने राष्ट्रीय हित की न केवल रक्षा की है बल्कि पश्चिमी देशों ने 'नाटो' के माध्यम से जिस अवरोध की नीति प्रतिपादन किया था उसकी पुनरावृत्ति रोकने के लिए यह कदम उठाना अपरिहार्य था। इसके अतिरिक्त रूस सीमा पर पश्चिमी देशों द्वारा सैन्य गतिविधियाँ तेज करने का आरोप पुतिन ने लगाया। उनका यह मानना है कि 'नाटो' के प्रसार के तहत चेक गणराज्य, पोलैण्ड तथा बाल्टिक गणराज्य के इस खेमे में शामिल होने से रूसी सीमा पर अस्थिरता का खतरा है

इसीलिए भी रूस का यह कदम सही था। दरअसल उक्रेन का घटनाक्रम रूस में विलय के साथ अन्त होता दिखाइै पड़ता। पुतिन का उक्रेन पर यह भी दबाव है कि वह तटस्थ रहे तथा एकात्मक शासन पद्धति के स्थान पर संघात्मक शासन पद्धति को अपनाये। प्रायः यह समझा जाता है कि इस कदम से उक्रेन के दक्षिण–पूर्व में रूस समर्थक कवि को विदेश नीति सम्बन्धी निर्णयों के निर्धारण यथा नाटो की सदस्यता जैसे विषयों पर निषेधाधिकार प्राप्त होगा तथा इससे रूस के हितों की रक्षा होगी। उक्रेन में सैनिक हस्तक्षेप तथा क्रीमिया के रूस में सम्मिलन के प्रश्न पर पुतिन का यह तर्क था कि रूसी प्रजाति के हितों के रक्षार्थ यह कदम नितान्त आवश्यक था। पुतिन यहाँ नही रूकते बल्कि क्रीमिया के सम्मिलन उन्होंने उक्रेन पर अपना प्रभाव कायम रखने के लिए आर्थिक दबाव का भी प्रयोग प्रारम्भ कर दिया तथा उक्रेन को 15 बिलियन की सहायता राशि का स्थगन इसी रणनीति का एक हिस्सा है।

रूस में क्रीमिया के सम्मिलन से पश्चिमी देशों तथा रूस मध्य उपजी कटुता ने भू–मण्डलीकरण के दौर में शीत–युद्ध के पुनः आविर्भाव का संकेत दिया है। दोनों पक्षों में वाक् युद्ध ने 1950 के दशक में दौरान आरोपों–प्रत्यारोपों की याद ताजा कर दी है। ओबामा की इस टिप्पणी पर कि सिर्फ एक क्षेत्रीय शक्ति है, भारत में रूस के राजदूत एलेक्जेण्डर एम कादकिन ने तल्ख प्रत्युत्तर में कहा, ''केवल ईश्वर ही इस बात का निर्णय कर सकता हे कि रूस महाशक्ति है अथवा क्षेत्रीय शक्ति। राष्ट्रपति ओबामा ईश्वर नही हैं''। रूस एवं अमेरिका तथा पश्चिमी देशों के बीच उत्पन्न ताजा तनाव के परिप्रेक्ष्य में कई महत्वपूर्ण प्रश्न पैदा हुए है। क्या भूमण्डलीकरण के इस युग में शीतयुद्ध का पुर्नजन्म हो रहा है? यदि वस्तुतः ऐसा होता है तो निश्चित रूप से विश्वस्तर पर विश्व संगठन, वैश्विक प्रशासन, वैश्विक संस्कृति, आर्थिक सहयोग के उभरते नए संगठनों एवं आयामों को एक करारा झटका ता लगेगा ही, विश्व एक बार फिर गुटों में विभाजित हो जायेगा। विभाजन का यह आधार इस बार वैचारिक न होकर रणनीतिक होगा तथा इससे वैश्विक धरातल पर शस्त्रों की होड़ एवं नाभीयकरण को गति मिलेगी। जो निर्विवादतः विश्व शान्ति एवं अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गम्भीर चुनौती होगी। क्रीमिया के प्रश्न पर रूस एवं यूरोपीय यूनियन के सदस्यों के विपरीत विश्व के अन्य देशों ने संयमित एवं संतुलित प्रतिक्रिया दी है। ब्रिक्स समूह के देशों, ब्राजील, भारत, चीन तथा दक्षिण अफ्रीका ने रूस के विरूद्ध किसी तरह के प्रतिबन्ध का समर्थन न करने का निर्णय लेते हुए एक साझा बयान में इन देशों ने रूस एवं अमेरिका के बीच उत्पन्न तनाव, कटुता, तिक्त भाषा, प्रतिबन्ध एवं आयुध शक्ति प्रदर्शन को विश्व शान्ति एवं अन्तर्राष्ट्रीय चार्टर में निहित अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रावधानों के विपरीत बताया है।

फिर भी क्रीमिया के मुद्दे पर कई गम्भीर प्रश्न पैदा होते है। क्या यह वस्तुतः शीतयुद्ध के प्रार्दुभाव की पृष्ठभूमि है ? अब अमेरिका की भावी रणनीति क्या होगी ? क्या अमेरिका क्रीमिया में रूसी हस्तक्षेप एवं अन्ततः उसके रूस में सम्मिलन का ढिढ़ोरा पीटकर यूरोप तथा मध्यएशिया में अपनी सामरिक क्षमता का विस्तारण करेगा ? यदि अमेरिका रूस के प्रति अत्यन्त कठोर रूख अपनाता है तो क्या इसके प्रतिक्रिया स्वरूप रूस एवं चीन का गठबन्धन सम्भावित है ? अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के विद्वान इस सम्भावना से इन्कार नही करते। यह तर्क दिया जाता है कि रूस के पास ऊर्जा का अथाह भण्डार है तथा चीन एक उदयीमान आर्थिक शक्ति है। क्या इस स्थिति का लाभ उभरता हुआ चीन स्वयं का एक महाशक्ति के रूप में प्रस्थापित करने में ले सकता है ? क्या रूस और अमेरिका के मध्य क्रीमिया के बहाने, विश्व के ऊर्जा भण्डारो पर अपना नियन्त्रण एवं प्रभुत्व कायम करने की होड़ तो नही ? अब यूरोपीय सुरक्षा का स्वरूप क्या होगा ? समकालीन विश्व व्यवस्था में भू–अर्थशास्त्र की बढ़ती हुई महत्ता के परिप्रेक्ष्य में शक्ति समीकरणों के स्वरूप का क्या

होगा? क्या शीत युद्धोत्तरकाल की विश्व व्यवस्था पर, जिसमें अमेरिका मात्र महाशक्ति में रूप में गौरवन्वित था, विराम लग चुका है? रूस का यह कदम किसी नयी विश्वव्यवस्था के प्रारम्भ का संकेत तो नही? आदि अनेक ऐसे प्रश्न है जो निश्चित रूप से राजनीति विज्ञान के अध्येताओं एवं विद्वानों का बौद्धिक उद्वेलन करते रहेगें। मुझे आशा ही नही अपितु पूर्ण विश्वास है कि राजनीति विज्ञान जगत से सन्निद्ध विद्वान अपने आलेखों, शोधपत्रों, टिप्पणियों तथा समीक्षाओं से उर्पयुक्त प्रश्नों एवं संशयों का निवारण करते हुए समकालीन अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं सम्बन्धी ज्ञान–क्षितिज का विस्तारण करेंगे तथा भारतीय राजनीति विज्ञान परिषद् के इस अकादमिक आयाम को समृद्धि प्रदान करने की दिशा में निरन्तर प्रयत्नशील रहेंगे।

नैनीताल
रामनवमी

(मधुरेन्द्र कुमार)